1

विद्यालयी पाठ्यचर्या

पाठ्यचर्या — पाठ्यचर्या विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का केंद्र बिंदु है। विद्यालय में उपलब्ध सभी संसाधन जैसे- विद्यालय भवन विद्यालय के अन्य उपकरण पुस्तकालय की पुस्तकें, तथा अन्य शिक्षण सामग्री का एक मात्र उद्देश्य पाठ्यचर्या के प्रभावी क्रियान्वयन में सहयोग देना है। कक्षा की समस्त क्रियाएं, पाठ्यसहगामी क्रियाकलाप तथा मूल्यांकन की समस्त प्रक्रिया विद्यालयी पाठ्यचर्या के परिणामस्वरूप ही नियोजित की जाती है।

अर्थ — पाठ्यचर्या शैक्षिक व्यवस्था का अनिवार्य एवं महत्वपूर्ण अंग है। पाठ्यचर्या की अवधारणा के सन्दर्भ में प्राय: विद्वानों में एकमत्य नहीं है। पाठ्यचर्या को लोग पाठ्यचर्या या विषय-वस्तु जैसे नामों से भी संबोधित करते है।

2

पाठ्य-चर्या शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है - पाठ्य एवं चर्या। पाठ्य का अर्थ है - पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य और चर्या का अर्थ है - नियम पूर्वक अनुसरण। इस प्रकार पाठ्य-चर्या का अर्थ हुआ पढ़ने योग्य (सीखने योग्य), अथवा पढ़ाने योग्य (सिखाने योग्य)। विषय-वस्तु और क्रियाओं का नियम पूर्वक अनुसरण। पाठ्य-चर्या के लिए अंग्रेजी में curriculum शब्द का प्रयोग किया जाता है। यह शब्द लैटिन भाषा के करेरे (currere) से बना है जिसका अर्थ है - रनवे (Runway) या रेस कोर्स (Race course) अर्थात दौड़ का रास्ता या दौड़ का क्षेत्र अर्थात किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए मार्ग पर दौड़ना या ऐसे भी कह सकते है, इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में पाठ्य-चर्या बच्चों के लिए दौड़ का रास्ता या दौड़ के मैदान के समान है जिस पर चलते हुए बालक अपने वांछित शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा करता है।

3

फ्रोबेल के अनुसार — "पाठ्यचर्या को मानवजाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिये।"

ब्रुवेकर के अनुसार — "पाठ्यचर्या एक ऐसा क्रम है जो किसी व्यक्ति को स्थान पर पहुँचने के लिए तय करना पड़ता है।"

हेनरी के अनुसार — "विस्तृत अर्थ में पाठ्यचर्या के अंतर्गत समस्त विद्यालय का वातावरण आता है, जिसमें विद्यालय में प्राप्त सभी प्रकार के संपर्क पठन क्रियाएँ एवं विषय सम्मिलित है।"

इस प्रकार पाठ्यचर्या का सम्बन्ध सीखने वाले एवं सिखाने वाले से होता है। यह सीखने और सिखाने वाले को जोड़ने वाली अनिवार्य कड़ी है।

५

पाठ्यचर्या की उपयोगिता एवं महत्व :-

पाठ्यचर्या की उपयोगिता एवं महत्व इस प्रकार से है।

- पाठ्यचर्या के माध्यम से शिक्षा की प्रक्रिया सुचारु रूप से चलती है।
- शिक्षा के किस स्तर पर इन पाठ्य विषयों को पढ़ाना है किन क्रियाओं को सीखना है और किन अनुभवों को देना है। यह सारी बातें पाठ्यचर्या में स्पष्ट रूप से दी जाती है।
- विद्यालयी जीवन के कार्यक्रम की पूरी रूपरेखा पाठ्यचर्या में मिलती है।
- पाठ्यचर्या के उपलब्ध हो जाने से आवश्यक एवं वांछनीय पाठ्य सामग्री को पुस्तक की रचना के समय ध्यान में रखा जाता है।
- पाठ्यचर्या विद्यार्थी और अध्यापक दोनों को सही दिशा बोध कराती है।

• मूल्यांकन पाठ्यचर्या के आधार पर ही किया जाता है।

Q. विद्यालय पाठ्यचर्या की रूपरेखा :

स्कूली शिक्षा के संदर्भ में पाठ्यचर्या संबंधी विषयों ने हाल-फिलहाल अकादमिक क्षेत्र में काफी रुचि पैदा की है और कुछ विवादों को भी जन्म दिया है। इसे इस बात का सूचक माना जा सकता है कि स्कूली शिक्षा, खास कर इसकी गुणवत्ता से जुड़े पहलुओं को कितना महत्व दिया जा रहा है? शैक्षिक परिषदों और रणनीतियों के निर्माण में शिक्षण-अधिगम के विषयवस्तु और तौर-तरीके हमेशा से केन्द्र की महत्व के सवाल रहे हैं शुरू में पाठ्यचर्या के नाम पर पाठ्यक्रम पर चर्चा होती थी और उसी का निर्माण किया जाता था, लेकिन अब इन दोनों के बीच स्पष्ट फर्क किया जाता है जो विविध मुद्दों के बारे में अलग-अलग समझ का संकेतक है,

अपनी स्थापना के थोड़े समय बाद ही राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् राष्ट्रीय स्तर पर पाठ्यचर्या विकास, पाठ्यक्रम निर्माण तथा पाठ्यपुस्तकों समेत शिक्षण सामग्रियों की तैयारी की एक ज़रूरी बन गया। कोठारी आयोग रिपोर्ट (1964-66) तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1968) के कुछ वर्ष बाद राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने 'दसवर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यचर्या एक रूपरेखा' 1975 में प्रकाशित की और उसके बाद 'उच्च माध्यमिक शिक्षा तथा इसका व्यवसायीकरण' (1976) का प्रकाशन किया। कोठारी आयोग की अनुशंसाओं के आलोक में 10+2 रूपरेखा की पुनर्संरचना के अलावा क्रियाकलाप आधारित शिक्षा पर भी जोर दिया गया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1988) की रोशनी में 'प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या : एक रूपरेखा' तैयार

की गई। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद ने दूसरी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या वर्ष 2000 में तैयार की इसमें यह कहा गया कि :

" यह आम स्वीकृति की बात है कि शिक्षा में पाठ्यचर्या का नवीकरण और विकास निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है और कोई भी सरकार इस मामले में ढिलाई नहीं बरत सकती है। पाठ्यचर्या ऐसी ही होनी चाहिए कि वह शिक्षार्थी की जरूरतों सामाजिक अपेक्षाओं, सामुदायिक आकांक्षाओं और अन्तर्राष्ट्रीय तुलनाओं को संतुष्ट कर सकें। इसके अलावा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), तथा क्रियान्वयन कार्यक्रम (1992) की समीक्षा के तर्ज पर (प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या : एक रूपरेखा' के प्रकाशन के बाद से कोई समीक्षा नहीं हुई और इसलिए यह वर्तमान प्रयास अनिवार्य बन गया।

यह नवीं पंचवर्षीय योजना (1997 - 2002) के दस्तावेज की सिफारिश थी है।"

वर्ष 2000 में पाठ्यचर्या रूपरेखा की समीक्षा के बावजूद पाठ्यचर्या का बोझ और परीक्षाओं की यंत्रणा के जटिलता में यह मुद्दा अनसुलझा ही रह गये, वर्तमान समीक्षा प्रयास में इस क्षेत्र के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों किस्म के बदलावों का संज्ञान लिया गया है।